हिन्दी भाषा के प्रसार मे हिन्दी संस्थाओ की भूमिका

प्रस्तुतकर्त्री – पवन कुमारी
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
हंसराज महिला महाविद्यालय, जालंधर

प्रमुख संस्थाएं :

1. ब्रह्म समाज
2. प्रार्थना समाज
3. आर्य समाज
4. सनातन धर्म सभा
5. थियोसोफिकल सोसाईटी
6. इंडियन नेशनल कांग्रेस
7. भारतेंदु मंडल
8. सरस्वती पत्रिका
9. नागरी प्रचारिणी सभा
10. हिंदी साहित्य सम्मलेन
11. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

ब्रह्मा समाज

- संस्थापक –राजा राम मोहन राय

  स्थापना वर्ष -1828 ई.

Raja Ram Mohan Roy

राजा राममोहन राय का हिंदी भाषा के प्रति अगाध प्रेम था | उन्होंने ब्रह्ममैनिकल मैगजीन, संवाद कौमुदी, मिरात-उल-अखबार, बंगदूत जैसे स्तरीय पत्रों का सम्पादन व प्रकाशन किया | इसमें हिंदी भाषा का प्रयोग कर हिंदी का प्रचार व प्रसार किया |

प्रार्थना समाज

- संस्थापक –रामकृष्ण परमहंस
- स्थापना वर्ष -1849

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से शिक्षित भारतीयों में अपने सामाजिक और आर्थिक विश्वासों तथा रीति-रिवाजों के दोषों और त्रुटियों के प्रति जागृत करने के लिए हिंदी भाषा के ज्ञान को माध्यम बनाया |

आर्य समाज

- संस्थापक –दयानंद सरस्वती
- स्थापना वर्ष -1875

स्वामी दयानंद ने हिंदी भाषा में ‘सत्यार्थ प्रकाश’ नामक पुस्तक तथा वेद भाष्यों की रचना की तथा हिंदी भाषा के प्रचार को एक नया मार्ग प्रदान किया |

सनातन धर्म सभा

- संस्थापक –पंडित दीनदयाल शर्मा
- स्थापना वर्ष - 1895

सनातन धर्म अपने मूल रूप में हिंदु धर्म के साथ जुड़ा हुआ है | भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने के साथ-साथ इन्होंने भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाया |

थियोसोफिकल सोसाइटी

- संस्थापक –एनी बेसेंट
- स्थापना वर्ष -1893

भारत में इस आन्दोलन की गतिविधियों को व्यापक रूप से फैलाने का श्रेय श्रीमती एनी बेसेंट को दिया जाता है | भारत में आकर वे भारतीय भाषा, विचार व संस्कृति से अति प्रभावित हुई | भारत के प्रति अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाया | 1898 ई. में बनारस में सेंट्रल हिंदु कॉलेज की स्थापना की |

इंडियन नेशनल कांग्रेस

संस्थापक –श्री .ए.ओ.ह्यूम

- स्थापना वर्ष -1884

उद्देश्य :

1. भारतीयों को राजनीतिक लक्ष्यों से परिचित करवाना एवं अपनी भाषा में राजनीतिक शिक्षा देना |

2. हिंदी भाषा द्वारा राष्ट्रवादी भावना को प्रोत्साहित करना |

3. राष्ट्र भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की स्थापना करना |

भारतेंदु मंडल

- संस्थापक –भारतेंदु हरिश्चंद्र

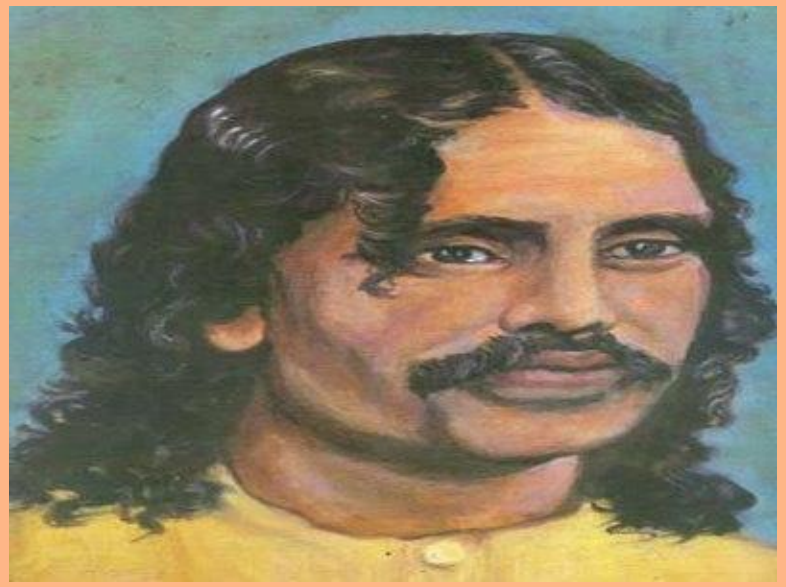

भारतेंदु हरिश्चन्द्र के समय हिंदी लेखकों व कवियों का एक मंडल बन गया, हिंदी साहित्य के इतिहास में इसे भारतेंदु मंडल के नाम से जाना जाता है | भारतेंदु जी के नेतृत्व में राष्ट्रीयता की भावना की जागृति के लिए हिंदी भाषा आधार बनी |

सरस्वती पत्रिका

- संस्थापक –आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
- स्थापना वर्ष -1900

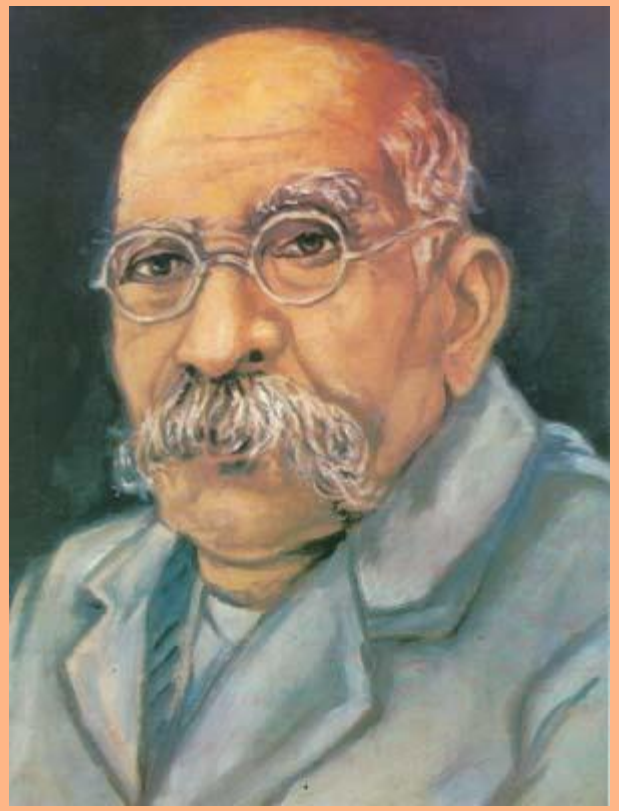

सरस्वती हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध रूपगुणसंपन्न प्रतिनिधि पत्रिका थी | आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा को नया रूप देकर समृद्धि प्रदान की | उन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों को हिंदी भाषा का महत्व समझाया एवं गद्य एवं पद्य के लिए मार्ग निर्मित किया |

नागरी प्रचारिणी सभा

- स्थापना वर्ष -1893

नागरी प्रचारिणी सभा हिंदी भाषा, साहित्य एवं देवनागरी लिपि की उन्नति तथा उसका प्रचार व प्रसार करने वाली अग्रणी संस्था है | भारतेंदु युग के अनंतर हिंदी साहित्य की जो उल्लेखनीय प्रवृतियाँ रहीं हैं उन सबके नियमन, नियंत्रण और संचालन में इस सभा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है |

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

- संस्थापक –बाबू श्याम सुन्दरदास
- स्थापना वर्ष -1910

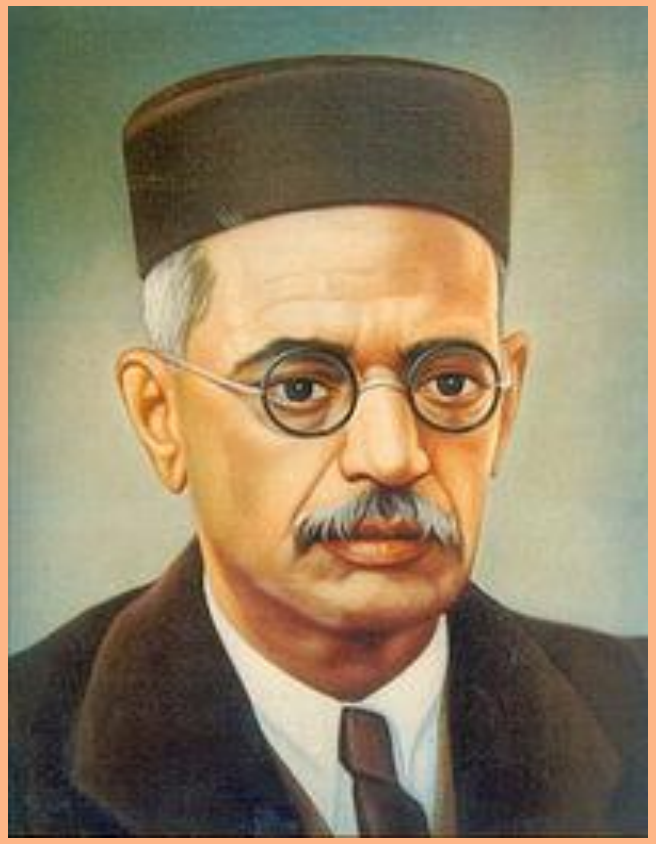

हिंदी साहित्य सम्मलेन के मुख्य उद्देश्य :

* राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना
* हिंदी भाषा को अधिक सरल, सुगम और समृद्ध बनाना
* हिंदी भाषी प्रदेशों में सभी सरकारी-अर्धसरकारी व गैर सरकारी तंत्रों में हिंदी भाषा का प्रयोग करना
* हिंदी के लेखकों-रचनाकारों को समय-समय पर सम्मानित करना
* हिंदी भाषा की उन्नति के लिए महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करना |

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

संस्थापक –महात्मा गाँधी

- स्थापना वर्ष -1918

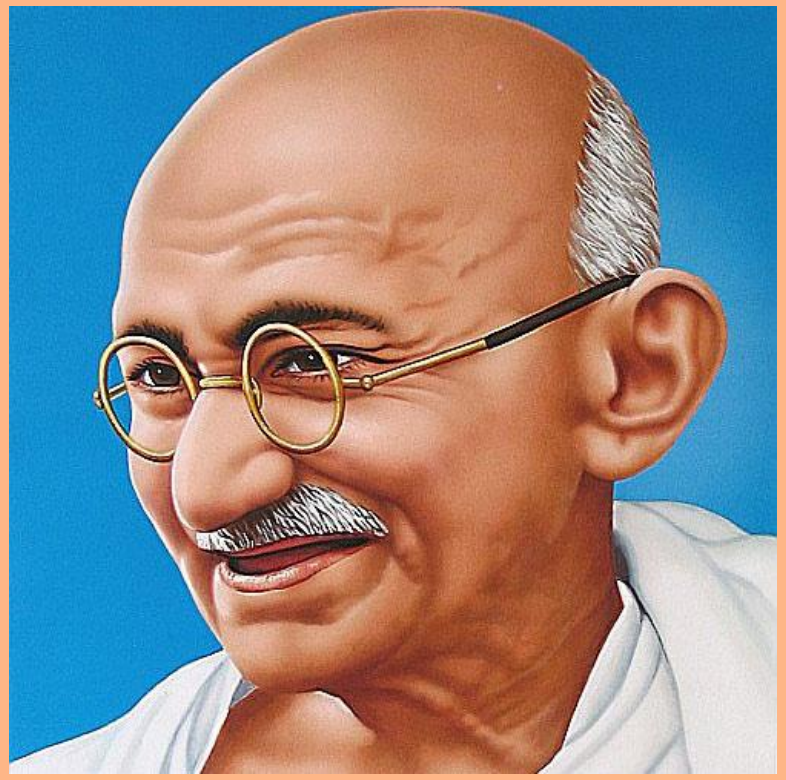

यह एक हिंदी सेवी संस्था है जो भारत के दक्षिणी राज्यों में स्वतंत्रापूर्व से ही हिंदी के प्रचार व प्रसार का कार्य कर रही है |

सारांशत : हिंदी भाषा के प्रचार व प्रसार में इन महत्वपूर्ण संस्थाओं का योगदान चिरस्मरणीय है | इनके बहुमूल्य योगदान से आज हिंदी भाषा विश्व स्तर पर अपना प्रतिष्ठित रूप प्राप्त करने में प्रयत्नशील है |

धन्यवाद